दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्यय →

पाश्चात्य जगत में दर्शन का सर्वप्रथम विकास यूनान (ग्रीक) देश में हुआ। प्रारम्भ मे तो वहा भी दर्शन का क्षेत्र बड़ा व्यापक था। परन्तु जैसे जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ दर्शन एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में सीमित होता चला गया। दर्शन के लिए अंग्रेजी मे Philosophy शब्द का प्रयोग होता है। जो दो ग्रीक शब्दो Philos + Sophia से मिलकर बना है। Philos का अर्थ है प्रेम और Sophia का अर्थ है। ज्ञान इसलिए Philosophy का अर्थ है। ज्ञान से प्रेम। यह दर्शन का विस्तृत अर्थ है। यूनानी (ग्रीक) दार्शनिक प्लेटो दर्शन को इसी अर्थ मे स्वीकार करते थे। उनके शब्दो में वह व्यक्ति जो सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता है। और सीखने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। और कभी भी संतोष करके रुकता नही है वही दार्शनिक है।

पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है- Plato

प्लेटो के शिष्य अरस्तु प्रत्यय के साथ-साथ व्यवहारिकता पर भी बल देते थे। उन्होंने प्लेटो द्वारा प्रस्तुत दर्शन की परिभाषा को थोड़े अन्तर के साथ प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार-

"दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जाँच करता है।"

काण्ट ने दर्शन को केवल कोरा ज्ञानशास्त्र कहा उनके अनुसार

"दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है"।

दर्शन में हम अपने सामान्य विचारों की संदिग्धता और भ्रामकता की परख करते हैं, उन सब पर विचार एवं अनुसंधान करते हैं। जो हमारे अंतिम प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में भ्रम पैदा करते हैं। और अन्त में अपने अंतिम प्रश्नों के आलोचनात्मक उत्तर प्राप्त करते हैं। Bertrand Russell

दर्शन की प्रकृति →

शिक्षा में दर्शन की अवधारणा एवं दर्शन की परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर इसमें अग्रलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं जो कि दर्शन की प्रकृति को स्पष्ट करती हैं—

(1) गहन विचार →

दार्शनिक विचार प्रक्रिया में गहनता से प्रत्येक तथ्य का अध्ययन किया जाता है। इसमें तथ्यों के कारण एवं सम्बन्धों को ज्ञात किया जाता है अर्थात दार्शनिक विचार प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी नियम एवं परम्परा को स्वीकार करने से पूर्व उस पर पूर्ण रूप से विचार किया जाता है। इसके बाद ही उसे स्वीकार किया जाता है।

इसके बाद ही उसे स्वीकार किया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप अनेक महान दार्शनिकों द्वारा समाज में प्रचलित परम्पराओं एवं रूढ़ियों का विरोध किया गया क्योंकि वे दार्शनिक विचार प्रक्रिया पर खरा नहीं उतरती हैं।

Scanned with CamScanner

दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव →

किसी समाज की शिक्षा मुख्य रूप से उस समाज के स्वरूप, उसके दार्शनिक चिन्तन, शासनतन्त्र, आर्थिक व्यवस्था और मनोविज्ञानिक तथ्यों तथा वैज्ञानिक तथ्यों तथा वैज्ञानिक प्रगति पर आधारित होती है। इसमें दर्शन का प्रभाव बड़ा स्थायी होता है। दर्शन की तत्व मीमांशा से शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्य-चर्या, ज्ञान एवं तर्क मीमांशा से पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ और मूल्य एवं आचार मीमांशा से शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक तथा शिक्षार्थी के कर्तव्य और अनुशासन का स्वरूप निश्चित है। स्पष्टीकरण प्रस्तुत है।

दर्शन और शिक्षा का उद्देश्य →

दर्शन का सर्वप्रथम भाग तत्वमीमांशा होती है। इसमें सृष्टि-स्रष्टा, आत्मा-परमात्मात्मा, जीव जगत और जन्म-मरण आदि की व्याख्या होती है और

और वे उसके आधार पर मानव जीवन के उद्देश्य निश्चित किए जाते हैं। शिक्षा द्वारा इन उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

उदाहरण के लिए प्रकृति वादी दार्शनिक मनुष्य को उच्च पशु मानते हैं। इसलिए वे शिक्षा द्वारा उसकी भौतिक शक्तियों का विकास पर बल देते हैं, प्रयोजन वे मनुष्य को आत्माधारित मानते हैं इसलिए वे उसके आत्मिक विकास पर बल देते हैं।

Scanned with CamScanner

दर्शन और शिक्षा का पाठ्यचर्या

दर्शन का दूसरा भाग ज्ञान मीमांशा एवं तर्क मीमांशा होता है।
इसमे ज्ञान के स्वरूप की व्याख्या की जाती है और इसके आधार पर शिक्षा की पाठ्यचर्या में उसी ज्ञान का समावेश किया जाता है। जिसे वे मानव के लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिए आवश्यक समझते हैं। फिर, पाठ्यचर्या तो शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है, तो उसकी पाठ्यचर्या भी उससे प्रभावित होनी चाहिए। ऐतिहासिक तथ्य भी इसका समर्थन करते हैं। जिस समाज में प्रकृतिवादी दर्शन का बोलबाला होता है उसमे मनुष्य का जीवन सुखपूर्वक जीवन करने के लिए तैयार किया जाता है और शिक्षा की पाठ्यचर्या मे शारीरिक क्रियाओ, भौतिक विज्ञानो एवं व्यवसायिक विषयो को मुख्य स्थान दिया जाता है।

जिस समाज मे प्रयोजनवादी दर्शन का प्रभाव होता है उसकी शिक्षा मे आदर्शवादी दर्शन का प्रभाव होता है। इसमे आत्म अनुभूति के लिए शिक्षा की पाठ्यचर्या मे स्थान दिया जाता

Scanned with CamScanner

= दर्शन और शिक्षण विधियाँ =

दर्शन को ज्ञान एवं तर्क मीमांशा में मानव बुद्धि, ज्ञान के स्वरूप और ज्ञान प्राप्त करने की विधियों की व्याख्या होती है।

इसी के आधार पर दार्शनिक शिक्षण विधियो का करते हैं। उदाहरण के लिए प्रकृतिवादी दार्शनिक मनुष्य को केवल मनोशारिरिक प्राणी मानते हैं इसलिए वो इन्द्रियो द्वारा सीखने पर बल देते हैं, प्रयोजनवादी दार्शनिक मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानते इसलिए वो सामाजिक क्रियाओ द्वारा सीखने पर बल देते हैं।

और आदर्शवादी दार्शनिक मनुष्य को आत्माधारी मानते हैं इसलिए वो आत्मकेन्द्रित विधियो द्वारा सीखने पर बल देते हैं।

Scanned with CamScanner

दर्शन और शिक्षक तथा शिक्षार्थी ⇒

दर्शन की तत्व मीमांशा में मनुष्य के स्वरूप और मूल्यमीमांशा एवं आचार मीमांशा में उनके करणीय तथा अकरणीय कर्मों की विषद् व्याख्या की जाती है दर्शन की इस व्याख्या के अनुसार ही शिक्षा, और शिक्षार्थी का स्वरूप एवं उनके ~~अनुसार~~ कर्तव्य निश्चित होते है। उदाहरण स्वरूप प्रकृतिवादी दर्शन यह मानते है कि मनुष्य केवल प्रकृति की रचना है जो जन्म से कुछ मूल शक्तियाँ लेकर पैदा होता है। और इन्ही के अनुसार उसका विकास होता है। इसलिए वे विद्यार्थी को आत्मप्रकाशन की छूट देते है और शिक्षको से केवल यही आशा करते है कि वे शिक्षार्थियों के स्वभाविक विकास में सहायता करें दोनो को सामाजिक आचरण करने की सलाह देते है और इसके लिए वे शिक्षक व शिक्षार्थी दोनो को सामाजिक सहायता करें। प्रयोजनवादी दार्शनिक मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानते है इसलिए वे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो को सामाजिक आचरण करने की सलाह देते इसके लिए उनमें सर्वप्रथम सामाजिक स्व: का विकास करने पर

दर्शन और विद्यालय ⟹ प्राय: सभी दार्शनिक मनुष्य के लिए आचार संहिता तैयार करते है और इसके लिए शिक्षा का विधान करते है। अब यह शिक्षा कहा दी जाय और कैसे दी जाय इस पर भी वो प्रकाश डालते हैं प्रकृतिवादी दार्शनिक विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा लादी किसी भी प्रकार की व्यवस्था का विरोध करते है प्रकृति वादी विद्यालयों मे बच्चे कभी भी और कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र होते है।

प्रयोजनवादी दार्शनिक विद्यालयों में उच्च सामाजिक पर्यावरण बनाने पर बल देते है। इनके विद्यालयों मे बच्चे सामूहिक रूप से क्रियाओं मे भाग लेकर सीखते है।

आदर्शवादी दार्शनिक विद्यालयों में अध्यापक पर्यावरण बनाने पर बल देते है।

इनके विद्यालय में शिक्षक आत्म ज्ञानी होते हैं और छात्र आज्ञाकारी होते है।

शिक्षा दर्शन का अर्थ एवं परिभाषा

Mening and Definition of Filosophy of Education —

सृष्टि, सृष्टा आत्मा-परमात्मा, जीव जगत, ज्ञान - अज्ञान, करणी तथा अकरणीय कर्मो आदि के सम्बन्ध मे दार्शनिको के अपने मत हैं।

दर्शनशास्त्र ~~दर्शन~~ में इन विभिन्न मतों का वर्णन होता है। उसके अध्ययन से हम ब्रह्माण्ड और उसमे मानव जीवन का क्या महत्व है, इससे परिचित होते हैं और उसके आधार पर मनुष्य जीवन के अन्तिम उद्देश्य को निश्चित करते है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हम शिक्षा के द्वारा करते हैं। प्रायः सभी दार्शनिको ने इस पर प्रकाश डाला है कि यथा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा का स्वरूप क्या होना चाहिए यही कारण है कि दर्शन मे शैक्षिक अथवा शिक्षा दर्शन का विकास हुआ। दूसरी तरफ शिक्षाशास्त्री भी जब शिक्षा की समस्याओं का हल ढूंढते हैं तो उन्हे सबसे पहले शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करना होता है। चूँकि शिक्षा के उद्देश्य प्रायः वही होता है जो

Scanned with CamScanner

जो दर्शन निश्चित करता है। इस लिए शिक्षा शास्त्रियों को भी पहले दर्शन पर निर्भर करना पड़ता है। जब शिक्षा शास्त्री शैक्षिक समस्याओं के प्रति जागरूक होते हैं और उनके समाधान के लिए दर्शन का सहारा लेना पड़ता है। तो शिक्षा दर्शन का उदय होता है। इस प्रकार दार्शनिक और शिक्षा शास्त्री दोनों ही के द्वारा शिक्षा दर्शन का निर्माण होता है।

ऊपर के वर्णन से यह स्पष्ट है कि दर्शन का वह भाग जिसमें शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है और उन समस्याओं का हल प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षा दर्शन कहलाता है। दर्शन मनुष्य जीवन की व्याख्या कर उसके अन्तिम उद्देश्य और इस अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधन भूत है।

Scanned with CamScanner

शिक्षा दर्शन की आवश्यकता, उपयोगिता व महत्व

शिक्षा दर्शन के अध्ययन की आवश्यकता पर दो मत नहीं हो सकते।
इसके अध्ययन से शिक्षक को इस ब्रह्माण्ड एवं उसमें मानव जीवन के स्वरूप का ज्ञान होता है और वह शिक्षा के स्वरूप को समझने तथा शिक्षा की विभिन्न समस्याओं को हल करने की क्षमता प्राप्त करता है और यही इसका महत्व है।
शिक्षा दर्शन की आवश्यकता उपयोगिता और महत्व को हम निम्नलिखित रूप जान सकते हैं।

(1) इस ब्रह्माण्ड और उसमें मानव जीवन के प्रति विभिन्न दृष्टि कोण →

दर्शन हमें इस ब्रह्माण्ड और उसमें मानव जीवन के रहस्य से अवगत कराता है और जो रहस्य शेष रह जाता है इस ज्ञात और अपने स्वयं के अनुभव एवं तर्क के आधार पर प्रत्यक शिक्षक अपना दृष्टि कोण बनाता है। और उसके आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के सम्प्रत्यय और उद्देश्यों का ज्ञान →

शिक्षा दर्शन में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं द्वारा निश्चित शिक्षा के सम्प्रत्यय और उसके उद्देश्यों का वर्णन होता है। जिस दर्शन का इस ब्रह्माण्ड और उसमें मानव जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण होता है उसी के अनुसार वह शिक्षा का स्वरूप और उसके उद्देश्य निश्चित करता है। शिक्षा मानव जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है। इसलिए उसके उद्देश्य वही होते हैं। जो मानव जीवन के होते हैं।

और मानव जीवन के उद्देश्य भिन्न-भिन्न दर्शनों के निश्चित किए हैं।

इसलिए उनके द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों में भिन्नता है। शिक्षा दर्शन के अध्ययन से शिक्षक इन सब उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner